अपनो से अपनी बात...!

विश्वास-भरोसा उसी पर किया जाता है जो हमे लगता है हमे कभी **धोखा** नहीं देगा, हमारा **अहित** नहीं करेगा, हमे **संकट** से बचायेगा व बाहर भी निकालेगा जो विश्वास एक बच्चा अपने **माता पिता** पर करता है, क्योंकि वे उसके सबसे **विश्वसनीय** होते है। जिसे हम स्वयं से भी ज्यादा भरोसा करते है, विश्वास का पर्यायवाची **आस्था, निष्ठा, श्रद्धा** है, परन्तु क्या आपने इस विश्वास को **सार्थक** रखा है क्या हमने वास्तविकता मे किसी पर विश्वास किया है?

क्या आपने **''अब सौप दिया इस जीवन का सब भार तुम्हारे हाथों में''** को कभी **अर्थपूर्ण** करने का प्रयत्न किया है, आपको यह तो ज्ञात होगा कि **गुरू** हमारी **समस्याओं** का समाधान कर सकते है तभी आप इतनी संख्या में मीलों दूर से आते हैं, दीक्षा ग्रहण करते हैं, परन्तु फिर भी संशय करते हैं, आप में से कई 30-35 साल से गुरूदेव से **दीक्षित** है और तो कई उनके माता-पिता के समय से, जन्म से भी गुरू से जुड़े हैं, **गुरू-शिष्य का नाता तो जन्म-जन्मांतर का है।** तो जो रिश्ता इतना पावन है, इतना अटूट है, जो नाता हमे अपने स्वयं से अवगत करवाता है, हमे स्वयं को एवं स्वयं का ज्ञान प्रदान करते हैं।

गुरू अपने शिष्यों को स्वयं का ही अंग मानते हैं, अपने **प्राण, ज्ञान, चेतना** की **ऊर्जा** अपने **शिष्य** में **प्रज्जवलित** करते हैं अपने बच्चो से, अपने परिवार से भी अत्याधिक प्रेम करते है, तो एक शिष्य का भी दायित्व बनना है कि वे अपने गुरू पर विश्वास रखे व अपनी **चिंताओं** को आस्था में परिवर्तित करे, तभी गुरू आपके **संघर्ष को आशीर्वाद** में परिवर्तित करेंगे। आप अपने **विश्वास को, आस्था को, निष्ठा को, श्रद्धा को** इतना छोटा न करो क्योंकि आप अपने जीवन की अहम चीजो पर तो किसी अनजान पर भरोसा करते हो कि वो आपको सबसे **स्वच्छ, शुद्ध, पावन चीज, सेवा या ज्ञान** देगा, परन्तु आपको यह **विश्वास** स्वयं पर नहीं है, कि आप अपनी **पूर्ण श्रद्धा, आस्था, निष्ठा** अपने गुरू को दे सको। आपका विश्वास तभी **सार्थक** होगा जब आप गुरू द्वारा दी गई **चेतना** का सम्मान करोगे, स्वयं के एवं गुरू के **मान** को झुकने नहीं दोगे।

गुरू तो आपका साथ कभी नहीं छोड़ेगे पर यह निर्णय आपको लेना है कि आपको उठना है कि नहीं, आगे बढ़ना है कि नहीं!!

आपका अपना
विनीत श्रीमाली